सबद
पीयर-रिव्यूड त्रैमासिक शोध पत्रिका
वर्ष- 1, अंक- 1 (जनवरी–मार्च 2026)
ISSN: 3139-5317 (Online), 3139-5325 (Print)

दिनकर की 'रश्मिरथी' में कर्ण का आधुनिक स्वरूप

कोमल यादव

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में रामधारी सिंह दिनकर की प्रसिद्ध प्रबंध काव्य रचना रश्मिरथी में चित्रित कर्ण के आधुनिक स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। महाभारत के पारंपरिक आख्यान में कर्ण एक वीर योद्धा, दानवीर और दुर्योधन के निष्ठावान मित्र के रूप में प्रस्तुत होता है, किंतु दिनकर ने उसे केवल पौराणिक पात्र के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक सामाजिक चेतना के प्रतिनिधि के रूप में पुनर्सृजित किया है। इस अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि 'रश्मिरथी' का कर्ण जन्माधारित सामाजिक व्यवस्था, विशेषतः जाति-व्यवस्था, के विरुद्ध प्रतिरोध का सशक्त प्रतीक है। दिनकर कर्ण के माध्यम से यह स्थापित करते हैं कि मनुष्य की श्रेष्ठता उसके जन्म से नहीं, बल्कि उसके गुण, कर्म और संघर्ष से निर्धारित होती है। कर्ण का चरित्र सामाजिक उपेक्षा, आत्मसम्मान, कृतज्ञता, दानशीलता और नैतिक द्वंद्व जैसे मानवीय आयामों से निर्मित है। उसके संवादों में सामाजिक विषमता के प्रति तीव्र आक्रोश और समानता की चेतना दिखाई देती है। साथ ही, दुर्योधन के प्रति उसकी निष्ठा, कुंती-संवाद और कवच-कुंडल दान जैसे प्रसंग उसके चरित्र के गहन मानवीय और नैतिक पक्ष को उद्घाटित करते हैं। समकालीन संदर्भ में कर्ण का व्यक्तित्व वंचित और उपेक्षित वर्ग की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार 'रश्मिरथी' का कर्ण केवल एक पौराणिक नायक नहीं, बल्कि आधुनिक सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा और आत्मसम्मान की चेतना का प्रतीक बनकर उभरता है।

मूल शब्द: जाति-व्यवस्था, सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा, नैतिक द्वंद्व, आधुनिक चेतना, दानवीरता, आत्मसम्मान।

प्रस्तावना

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी साहित्य के उन प्रमुख कवियों में अग्रगण्य हैं जिन्होंने मिथकीय आख्यानों को आधुनिक संवेदनाओं से संपृक्त कर उन्हें नवीन अर्थवत्ता प्रदान की। 'रश्मिरथी' (1951) दिनकर की एक महत्वपूर्ण प्रबंध काव्य-रचना है, जिसमें महाभारत के उपेक्षित किंतु अत्यंत जटिल चरित्र कर्ण को केंद्र में रखकर पुनर्सृजित किया गया है। यह काव्य केवल पौराणिक कथा का पुनर्कथन नहीं है, अपितु आधुनिक सामाजिक चेतना, जातिगत असमानता, मानवीय गरिमा और नैतिक द्वंद्वों की सशक्त अभिव्यक्ति है। दिनकर ने कर्ण के माध्यम से उस ऐतिहासिक मौन को वाणी दी है, जो सदियों से सामाजिक उपेक्षा और जन्माधारित विभाजन की संरचनाओं में दबा हुआ था। महाभारत में कर्ण का चरित्र परंपरागत रूप से एक पराक्रमी योद्धा, दानवीर और दुर्योधन का अनन्य मित्र के रूप में चित्रित हुआ है; किंतु दिनकर की दृष्टि में वह मात्र वीरगाथा का पात्र नहीं, बल्कि सामाजिक विषमता का शिकार एक संघर्षशील व्यक्तित्व है। 'रश्मिरथी' में कर्ण का आधुनिक स्वरूप इस तथ्य से निर्मित होता है कि कवि उसे जाति-व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध की आवाज़ तथा कर्मप्रधान मानवतावाद का प्रतीक बनाते हैं। यहाँ जन्म से अधिक कर्म की प्रतिष्ठा है और कुल-परंपरा से अधिक व्यक्तिगत क्षमता का मूल्यांकन। इस प्रकार कर्ण का चरित्र एक व्यापक सामाजिक विमर्श का केंद्र बन जाता है।

दिनकर की युग-चेतना स्वतंत्रता-प्राप्ति के उपरांत निर्मित भारतीय समाज की जटिलताओं से अनुप्राणित है, जहाँ समानता, न्याय और सामाजिक पुनर्संरचना के प्रश्न प्रमुख थे। 'रश्मिरथी' में कर्ण का पुनर्पाठ इसी ऐतिहासिक संदर्भ में

समझा जाना चाहिए। कवि ने मिथकीय चरित्र को समकालीन सामाजिक यथार्थ से जोड़ते हुए यह प्रतिपादित किया कि व्यक्ति की पहचान उसके जन्म से नहीं, बल्कि उसके गुण, कर्म और संघर्ष से निर्धारित होती है। इस प्रकार कर्ण एक ऐसे आधुनिक नायक के रूप में उभरता है, जो परंपरा और परिवर्तन के मध्य सेतु का कार्य करता है। अतः प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य 'रश्मिरथी' में कर्ण के इसी आधुनिक स्वरूप का विश्लेषण करना है, यह देखना कि दिनकर किस प्रकार पौराणिक कथानक को आधार बनाकर सामाजिक न्याय, मानवीय स्वाभिमान और नैतिक जटिलताओं की समकालीन व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। कर्ण का यह पुनर्सृजन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि आधुनिक भारतीय समाज के वैचारिक विकास की समझ के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

कर्ण का पारंपरिक स्वरूप और दिनकर का पुनर्पाठ

महाभारत में कर्ण का चरित्र बहुस्तरीय और अंतर्विरोधों से युक्त रूप में प्रस्तुत हुआ है। वह सूर्य और कुंती का पुत्र होते हुए भी सामाजिक रूप से 'सूत-पुत्र' के रूप में परिचित है। जन्म-परिस्थितियों के कारण उसका पालन-पोषण अधिरथ और राधा के यहाँ होता है, जिससे उसकी सामाजिक पहचान निम्न कुल से जुड़ जाती है। पारंपरिक आख्यान में कर्ण की प्रमुख विशेषताएँ उसकी अद्वितीय धनुर्विद्या, अर्जुन के समकक्ष प्रतिद्वंद्विता, दुर्योधन के प्रति अटूट निष्ठा और असाधारण दानशीलता हैं। महाभारत का कर्ण मूलतः एक वीर योद्धा है, जो सम्मान और मान्यता की खोज में निरंतर संघर्षरत दिखाई देता है। दुर्योधन द्वारा उसे अंगदेश का राजा बनाया जाना उसकी सामाजिक स्वीकृति का निर्णायक क्षण है। किंतु यह स्वीकृति उसे कौरव पक्ष से स्थायी रूप से बाँध देती है। पारंपरिक दृष्टि में कर्ण का चरित्र एक त्रासद नायक के रूप में उभरता है। योग्यता और सामर्थ्य के बावजूद वह सामाजिक पहचान, जन्म-गोपन और परिस्थितिजन्य निष्ठाओं के कारण अंततः पराजय को प्राप्त होता है। महाभारत में कर्ण के व्यक्तित्व का नैतिक आयाम भी जटिल है। एक ओर वह दानवीर और उदार है, तो दूसरी ओर द्रौपदी-अपमान जैसे प्रसंगों में उसकी उपस्थिति उसके चरित्र को विवादास्पद भी बनाती है। इस प्रकार पारंपरिक कर्ण न तो पूर्णतः आदर्श है, न पूर्णतः खल; वह मानवीय सीमाओं और परिस्थितियों से घिरा हुआ पात्र है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने 'रश्मिरथी' में कर्ण के पारंपरिक स्वरूप को आधार बनाकर उसका वैचारिक पुनर्सृजन किया है। यहाँ कर्ण केवल महाभारत का एक योद्धा नहीं, बल्कि सामाजिक विषमता और जन्माधारित अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रतीक बन जाता है। कवि ने उसकी उपेक्षित सामाजिक स्थिति को केंद्र में रखते हुए उसे आधुनिक मानवतावादी दृष्टि से पुनर्परिभाषित किया है। कर्ण अपने जन्म के कारण अपमानित होने की पीड़ा को केवल व्यक्तिगत दुख के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की त्रुटि के रूप में अनुभव करता है। यहाँ कर्ण की वाणी में स्वाभिमान और प्रश्नाकुलता है-

"जाति! हाय री जाति! कर्ण का हृदय क्षोभ से डोला,

कुपित सूर्य की ओर देख वह वीर क्रोध से बोला।"

इन पंक्तियों में कवि रामधारी सिंह दिनकर ने कर्ण के मन में उठ रहे गहरे आक्रोश और पीड़ा को व्यक्त किया है। समाज में बार-बार उसकी जाति को लेकर किए गए अपमान के कारण कर्ण का हृदय अत्यंत दुख और क्रोध से भर उठता है। कर्ण क्रोधित होकर सूर्य की ओर देखता है और अपने मन की वेदना व्यक्त करता है। यहाँ सूर्य की ओर देखना प्रतीकात्मक है, क्योंकि कर्ण स्वयं सूर्यपुत्र माना जाता है। वह मानो अपने पिता सूर्यदेव को साक्षी बनाकर यह कह रहा है कि समाज में जाति के कारण उसके साथ अन्याय किया गया है। वह व्यवस्था से संवाद करता है, उसे चुनौती देता

वर्ष- 1, अंक- 1 (जनवरी–मार्च 2026)
ISSN: 3139-5317 (Online), 3139-5325 (Print)

है। वह एक जागरूक, आत्मचेतस व्यक्तित्व के रूप में उभरता है, जो अपनी योग्यता के आधार पर सम्मान की माँग करता है। वह कहता है-

"जाति-जाति रटते, जिनकी पूँजी केवल पाखंड,

मैं क्या जानूँ जाति? जाति है ये मेरे भुजदंड।"

दिनकर ने कर्ण के स्वाभिमान और जाति-व्यवस्था के प्रति उसके विद्रोही दृष्टिकोण को व्यक्त किया है। कर्ण कहता है कि जो लोग बार-बार जाति की बात करते हैं, उनके पास वास्तव में कोई वास्तविक गुण या योग्यता नहीं होती; उनकी सबसे बड़ी पूँजी केवल पाखंड और दिखावा है। वे मनुष्य के कर्म, साहस और प्रतिभा को महत्व न देकर केवल जन्म और जाति के आधार पर उसका मूल्यांकन करते हैं। कर्ण इस संकीर्ण मानसिकता का विरोध करते हुए कहता है कि वह जाति को नहीं जानता। उसके लिए मनुष्य की असली पहचान उसकी शक्ति, पराक्रम और कर्म हैं। इसलिए वह गर्व से कहता है कि उसकी जाति उसके भुजदंड अर्थात् उसकी बाहुबल और वीरता

पारंपरिक आख्यान में जहाँ कर्ण की दुर्योधन-निष्ठा प्रमुख है, वहीं दिनकर उसे कृतज्ञता और मानवीय संबंधों की गरिमा के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कवि उसके निर्णयों को नैतिक जटिलता के साथ समझते हैं और उसे परिस्थितियों का निष्क्रिय शिकार नहीं, बल्कि अपने चयन का उत्तरदायी व्यक्ति मानते हैं। दिनकर के पुनर्पाठ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे कर्ण को 'सूत-पुत्र' की सीमित पहचान से मुक्त कर एक सार्वभौमिक मानवीय प्रतीक का दर्जा देते हैं। वह जन्म से नहीं, कर्म और संघर्ष से प्रतिष्ठित नायक है। इस प्रकार 'रश्मिरथी' में कर्ण का रूपांतरण पौराणिक पात्र से आधुनिक चेतना के प्रतिनिधि में हो जाता है, जहाँ उसकी त्रासदी व्यक्तिगत न रहकर सामाजिक और ऐतिहासिक अर्थ ग्रहण करती है।

'रश्मिरथी' में कर्ण का चरित्र केवल एक पराक्रमी योद्धा के रूप में नहीं, बल्कि जन्माधारित सामाजिक संरचनाओं के विरुद्ध मुखर प्रतिरोध के रूप में उभरता है। महाभारत के प्रसंगों में उसे बार-बार 'सूत-पुत्र' कहकर अपमानित किया जाता है, किंतु दिनकर इस अपमान को व्यक्तिगत पीड़ा से आगे ले जाकर एक व्यापक सामाजिक प्रश्न में रूपांतरित करते हैं। कर्ण का आक्रोश वस्तुतः उस जाति-व्यवस्था के विरुद्ध है, जो मनुष्य की योग्यता का मूल्यांकन उसके जन्म से करती है, न कि उसके कर्म और क्षमता से। कवि ने कर्ण के संवादों में आत्मसम्मान की तीव्र चेतना का स्वर स्थापित किया है। वह यह स्वीकार नहीं करता कि कुल-परंपरा ही मनुष्य की पहचान का अंतिम मानदंड है। उसके भीतर यह प्रश्न बार-बार उठता है कि यदि प्रतिभा और परिश्रम से अर्जित सामर्थ्य है, तो केवल जन्म के आधार पर उसे अपात्र क्यों माना जाए? वह कहता है-

"नहीं पूछता है कोई तुम व्रती, वीर या दानी हो,

सभी पूछते मात्र यही, तुम किस कुल के अभिमानी हो।

मनुज क्या करे? जन्म लेना तो उसके हाथ नहीं,

चुनना जाति और कुल अपने बस की तो है बात नहीं।"

यहाँ कर्ण के माध्यम से यह बताया गया है कि समाज किसी व्यक्ति के गुणों, जैसे उसके तप, वीरता या दानशीलता के बारे में नहीं पूछता। लोग केवल यह जानना चाहते हैं कि वह किस कुल या जाति में जन्मा है। कवि यह संकेत करते

हैं कि मनुष्य का जन्म किस जाति या कुल में होगा, यह उसके अपने हाथ में नहीं होता। इसलिए किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके जन्म के आधार पर करना अनुचित है। कर्ण के शब्दों में यह पीड़ा व्यक्त होती है कि समाज में व्यक्ति के गुणों और कर्मों की अपेक्षा उसके जन्म और जाति को अधिक महत्व दिया जाता है। कर्ण कहता है-

"मैं कहता हूँ अगर विधाता नर को मुठी में भरकर,

कहीं छींट दें ब्रह्मलोक से ही नीचे भूमण्डल पर,

तो भी विविध जातियों में ही मनुज यहाँ आ सकता है,

नीचे है क्यारियाँ बनी, तो बीज कहाँ जा सकता है?

कौन जन्म लेता किस कुल में? आकस्मिक ही है यह बात,

छोटे कुल पर, किन्तु यहाँ होते तब भी कितने आघात!

हाय, जाति छोटी हो, तो फिर सभी हमारे गुण छोटे,

जाति बड़ी, तो बड़े बनें, वे रहें लाख चाहे खोटे।"

दिनकर ने कर्ण के माध्यम से समाज में व्याप्त जाति-भेद की विडंबना और अन्याय को उजागर किया है। कर्ण कहता है कि यदि ईश्वर मनुष्य को अपनी मुट्ठी में भरकर सीधे पृथ्वी पर भी भेज दे, तब भी वह किसी न किसी जाति में ही जन्म लेगा, क्योंकि समाज की व्यवस्था पहले से ही विभिन्न जातियों में बँटी हुई है। जैसे खेत में बनी क्यारियों के कारण बीज को वहीं गिरना पड़ता है, उसी प्रकार मनुष्य भी किसी न किसी जाति में जन्म लेने के लिए बाध्य होता है। आगे कर्ण यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य का किस कुल या जाति में जन्म होगा, यह केवल संयोग की बात है। इसमें व्यक्ति का कोई दोष या अधिकार नहीं होता। फिर भी समाज में यदि किसी की जाति छोटी मानी जाती है, तो उसके सभी गुणों को भी छोटा समझ लिया जाता है। इसके विपरीत, यदि किसी की जाति बड़ी मानी जाती है, तो उसके अनेक दोष होने पर भी उसे महान माना जाता है।

अर्जुन के साथ उसका संघर्ष केवल दो योद्धाओं की स्पर्धा नहीं रह जाता; वह उच्चकुलीनता और उपेक्षित वर्ग के मध्य वैचारिक टकराव का रूप ग्रहण कर लेता है। रंगभूमि का प्रसंग विशेष रूप से इस तथ्य को रेखांकित करता है कि प्रतिभा के प्रदर्शन के क्षण में भी उसे उसकी सामाजिक उत्पत्ति के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है। यही वह क्षण है, जहाँ कर्ण का प्रतिरोध स्वर ग्रहण करता है, वह स्वयं को सिद्ध करने का संकल्प लेता है और व्यवस्था द्वारा आरोपित हीनता-बोध को अस्वीकार कर देता है। दिनकर के काव्य में कर्ण जन्म-आधारित श्रेष्ठता की अवधारणा को अस्वीकार करते हुए कर्मप्रधान दृष्टि का समर्थन करता है। उसका संघर्ष सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने का संघर्ष है, किंतु यह स्वीकृति दया या अनुग्रह से नहीं, बल्कि योग्यता के आधार पर चाहिए। इस प्रकार कर्ण का व्यक्तित्व एक ऐसे आधुनिक मनुष्य का प्रतीक बन जाता है, जो अपने अधिकारों के प्रति सजग है और आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की आकांक्षा रखता है। 'रश्मिरथी' में कर्ण का प्रतिरोध केवल व्यक्तिगत अपमान की प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि उस सामाजिक संरचना के विरुद्ध वैचारिक असहमति है, जो मनुष्य की पहचान को जन्म-आधारित सीमाओं में बाँध देती है। दिनकर ने उसे

वर्ष- 1, अंक- 1 (जनवरी–मार्च 2026)
ISSN: 3139-5317 (Online), 3139-5325 (Print)

एक ऐसे स्वर के रूप में स्थापित किया है, जो समानता, न्याय और मानवीय गरिमा की माँग करता है और इसी बिंदु पर वह आधुनिक सामाजिक चेतना का प्रतिनिधि बन जाता है।

कर्ण का मानवीय और नैतिक द्वंद्व

'रश्मिरथी' में कर्ण का चरित्र केवल सामाजिक प्रतिरोध तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह गहन मानवीय और नैतिक द्वंद्वों से भी अनुप्राणित है। रामधारी सिंह दिनकर ने कर्ण को एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है, जो परिस्थितियों, संबंधों और कर्तव्यबोध के बीच निरंतर संघर्ष करता है। उसका जीवन जितना बाह्य संघर्षों से भरा हुआ है, उतना ही आंतरिक स्तर पर भी जटिल और व्याकुल दिखाई देता है। दुर्योधन के प्रति कर्ण की निष्ठा इस द्वंद्व का केंद्रीय आयाम है। दुर्योधन ने उसे सामाजिक अपमान से उबारकर सम्मान और राज्य प्रदान किया; अतः कर्ण के लिए यह संबंध केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि गहन कृतज्ञता का प्रतीक बन जाता है। वह जानता है कि कौरव-पक्ष का समर्थन नैतिक दृष्टि से विवादास्पद है, किंतु उपकार के प्रत्युत्तर में वह स्वयं को उससे अलग नहीं कर पाता। यहाँ दिनकर कर्ण को अंधभक्त नहीं, बल्कि कर्तव्य और कृतज्ञता के बंधन में बँधे हुए व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

कुंती-संवाद कर्ण के नैतिक द्वंद्व का अत्यंत मार्मिक प्रसंग है। जब उसे अपने जन्म-रहस्य का ज्ञान होता है, तब उसके सामने एक नया संकट उपस्थित होता है, एक ओर मातृत्व का आकर्षण और दूसरी ओर मित्रता तथा कर्तव्य का दायित्व। वह यह स्वीकार करता है कि उसका रक्त संबंध पांडवों से है, परंतु जिसने जीवन भर उसका साथ दिया, उसे त्यागना उसके लिए संभव नहीं। इस प्रसंग में कर्ण का निर्णय त्याग और आत्मसंयम की पराकाष्ठा को व्यक्त करता है। वह अपने निजी हित की अपेक्षा वचनबद्धता को अधिक महत्व देता है। कर्ण की इसी निष्ठा और मित्रता-भाव को देखते हुए कृष्ण भी उसके व्यक्तित्व से प्रभावित हो उठते हैं। कवि इस स्थिति को इन पंक्तियों में व्यक्त करते हैं—

"हरी के मन में विस्मय छाया,

बोले कि वीर शत बार धन्य,

तुझ-सा न मित्र कोई अन्य,

तू कुरुपति का ही नहीं प्राण,

नरता का है भूषण महान।"

इन पंक्तियों में कवि ने कृष्ण के मुख से कर्ण के महान व्यक्तित्व और उसकी मित्रता की महत्ता को व्यक्त कराया है। जब कृष्ण कर्ण के साहस, उदारता और मित्रता के प्रति उसकी अटूट निष्ठा को देखते हैं, तो उनके मन में आश्चर्य और सम्मान की भावना उत्पन्न होती है। वे कहते हैं कि कर्ण जैसा सच्चा और निष्ठावान मित्र संसार में दूसरा कोई नहीं है। वह केवल दुर्योधन का सहायक ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता का गौरव है। कर्ण के चरित्र की इसी नैतिक ऊँचाई और मानवीय गरिमा को कवि ने इन पंक्तियों में भी अभिव्यक्त किया है—

"गुण-सा विवश डूबता, उगता, बहता, उतराता हूँ,

शील-सिंधु की गहराई का पता नहीं पाता हूँ।

घूम रही मन-ही-मन लेकिन, मिलता नहीं किनारा,

हुई परीक्षा पूर्ण, सत्य ही नर जीता सुर हारा।"

इन पंक्तियों में कर्ण के शील, उदारता और मानवीय महानता की गहराई को व्यक्त किया गया है। उसका चरित्र इतना विशाल और उदात्त है कि उसके गुणों की सीमा को समझ पाना कठिन प्रतीत होता है। कर्ण की दानशीलता भी उसके नैतिक व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। कवच-कुंडल का दान केवल उदारता का संकेत नहीं, बल्कि नियति को स्वीकार करने की साहसिकता का द्योतक है। वह जानता है कि इससे उसकी मृत्यु सुनिश्चित हो सकती है, फिर भी वह दान से पीछे नहीं हटता। इस प्रकार उसकी दानवीरता उसके आत्मविश्वास, त्याग और उच्च जीवन-दृष्टि का प्रतीक बन जाती है।

दिनकर के काव्य में कर्ण का यह नैतिक द्वंद्व उसे एक जीवंत और यथार्थ पात्र बनाता है। वह पूर्णतः निर्दोष नायक नहीं, बल्कि परिस्थितियों से घिरा हुआ, निर्णयों का भार उठाने वाला मनुष्य है। उसकी त्रासदी इसी में निहित है कि वह सत्य को जानकर भी अपने चुने हुए मार्ग से विचलित नहीं होता। इस प्रकार कर्ण का चरित्र आधुनिक मनुष्य की उस स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ नैतिक आदर्श, सामाजिक संबंध और व्यक्तिगत आकांक्षाएँ निरंतर टकराती रहती हैं।

कर्ण का आधुनिक स्वरूप और समकालीन प्रासंगिकता

'रश्मिरथी' में कर्ण का चरित्र अपने पारंपरिक आयामों से आगे बढ़कर आधुनिक चेतना का संवाहक बन जाता है। रामधारी सिंह दिनकर ने उसे केवल पौराणिक कथा के दायरे में सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे ऐसे मानवीय प्रतीक के रूप में स्थापित किया है, जो स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् भारतीय समाज के मूल प्रश्नों समानता, सामाजिक न्याय और आत्मसम्मान से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध है। कर्ण का आधुनिक स्वरूप इस तथ्य में निहित है कि वह जन्माधारित ऊँच-नीच की अवधारणा को अस्वीकार करता है और कर्मप्रधान मूल्य-व्यवस्था का समर्थन करता है। उसकी चेतना में अधिकार-बोध है; वह समाज से सम्मान की याचना नहीं करता, बल्कि उसे अपनी योग्यता के आधार पर प्राप्त करने का संकल्प व्यक्त करता है। इस दृष्टि से वह आधुनिक लोकतांत्रिक विचारधारा का पूर्वाभास कराता है, जहाँ व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके गुण और कर्म से निर्धारित होती है। इसी संदर्भ में कवि कर्ण की पीड़ा और सामाजिक व्यवस्था की विसंगति को इन पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त करते हैं—

"हाय कर्ण, तू क्यों जन्मा था? जन्मा तो क्यों वीर हुआ?

कवच और कुण्डलभूषित भी तेरा अधम शरीर हुआ?

धँस जाये वह देश अतल में, गुण की जहाँ नहीं पहचान,

जाति-गोत्र के बल से ही आदर पाते हैं जहाँ सुजान।"

इन पंक्तियों में कर्ण की वेदना केवल व्यक्तिगत नहीं रह जाती, बल्कि उस समाज की आलोचना बन जाती है जहाँ व्यक्ति के गुणों की अपेक्षा उसकी जाति को अधिक महत्व दिया जाता है। दिनकर के यहाँ कर्ण वंचित और उपेक्षित वर्ग का प्रतिनिधि बनकर उभरता है। उसकी पीड़ा किसी एक व्यक्ति की निजी त्रासदी न रहकर सामाजिक संरचना की विसंगति का द्योतक बन जाती है। इस प्रकार कर्ण का संघर्ष आधुनिक सामाजिक आंदोलनों, विशेषतः समानता और अधिकार की चेतना से जुड़ जाता है। कवि ने उसे एक ऐसे नायक के रूप में चित्रित किया है, जो अन्यायपूर्ण व्यवस्था के विरुद्ध आत्मसम्मान के साथ खड़ा होता है, भले ही परिणाम उसके प्रतिकूल क्यों न हों। समकालीन परिप्रेक्ष्य में कर्ण

का चरित्र इस प्रश्न को पुनः स्थापित करता है कि समाज में प्रतिभा और परिश्रम की प्रतिष्ठा किस प्रकार सुनिश्चित की जाए। वह हमें यह विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि क्या आज भी सामाजिक पूर्वाग्रह व्यक्ति की संभावनाओं को सीमित नहीं करते? इस अर्थ में 'रश्मिरथी' का कर्ण शाश्वत और सार्वकालिक बन जाता है।

अतः दिनकर का कर्ण केवल महाभारत का पात्र नहीं, बल्कि आधुनिक मानव की जिजीविषा, स्वाभिमान और संघर्षशीलता का प्रतीक है। उसका जीवन यह उद्घोष करता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्ति और नैतिक संकल्प के आधार पर इतिहास में अपना स्थान निर्मित कर सकता है। यही उसकी आधुनिकता और उसकी स्थायी प्रासंगिकता का आधार है।

निष्कर्ष

'रश्मिरथी' में कर्ण का पुनर्सृजन हिंदी साहित्य की उस सशक्त परंपरा का उदाहरण है, जिसमें मिथकीय पात्रों को समकालीन संदर्भों में पुनर्परिभाषित किया गया है। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने कर्ण को केवल महाभारत की कथा का अंग न मानकर एक ऐसे जीवंत मानवीय प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया है, जो सामाजिक विषमता, जातिगत अन्याय और नैतिक द्वंद्वों से जूझते आधुनिक मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पारंपरिक आख्यान में उपस्थित कर्ण की त्रासदी को दिनकर ने वैचारिक गहराई प्रदान की है। उन्होंने उसके संघर्ष को व्यक्तिगत स्तर से उठाकर सामाजिक और ऐतिहासिक स्तर पर स्थापित किया है। कर्ण का प्रतिरोध जन्माधारित व्यवस्था के विरुद्ध है; उसका आत्मसम्मान आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों का पूर्वाभास कराता है और उसका नैतिक द्वंद्व मनुष्य की जटिल आंतरिक स्थितियों को उद्घाटित करता है। दिनकर का कर्ण आदर्श और यथार्थ के मध्य संतुलन स्थापित करता है। वह न तो पूर्णतः निर्दोष नायक है और न ही खल-चरित्र; बल्कि परिस्थितियों के बीच निर्णय लेने वाला सजग व्यक्तित्व है। यही विशेषता उसे आधुनिक बनाती है। उसके माध्यम से कवि ने यह प्रतिपादित किया है कि मनुष्य की पहचान उसके कर्म, संकल्प और नैतिक साहस से निर्मित होती है, न कि केवल उसके जन्म से। अतः 'रश्मिरथी' में कर्ण का आधुनिक स्वरूप साहित्यिक पुनर्पाठ का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह काव्य न केवल पौराणिक कथा को नवीन अर्थ देता है, बल्कि समकालीन समाज के लिए समानता, न्याय और मानवीय गरिमा का संदेश भी प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से कर्ण का चरित्र समय और संदर्भ की सीमाओं का अतिक्रमण कर एक शाश्वत मानवीय आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. रामधारी सिंह दिनकर. रश्मिरथी. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
2. रामधारी सिंह दिनकर. संस्कृति के चार अध्याय. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
3. रामचंद्र शुक्ल. हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.
4. नामवर सिंह. कविता के नए प्रतिमान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
5. नगेन्द्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी. हिंदी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

7. नंददुलारे वाजपेयी. हिंदी साहित्य और संस्कृति. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

8. महाभारत. गोरखपुर: गीता प्रेस.

9. शर्मा, रामविलास. दिनकर और उनका साहित्य. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

10. तिवारी, रामचंद्र. आधुनिक हिंदी काव्य और विचारधारा. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन

11. सिंह, नामवर. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन